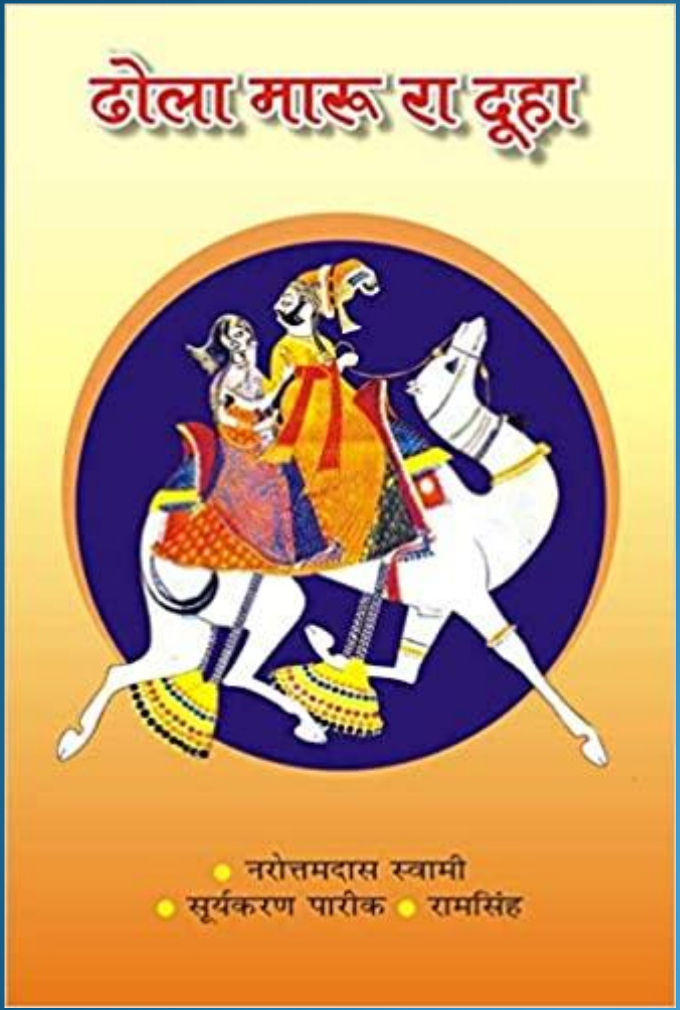


# ढोला मारू रा दूहा
## (दोहा 151 से 155)

डॉ. नवीन नंदवाना
हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)

# मारवणी का संदेश - 151

**बीजुळियाँ जाळउमिल्याँ, ढोला, हूँ न सहेसि।**

**जउ आसाढि न आवियउ, सावण समकि मरेसि।।१५१**

**भाव-**

बिजलियों के जाल मिल रहे हैं। मैं यह न सहूँगी। जो तुम आषाढ़ में नहीं आए तो मैं सावन में चौंककर मर जाऊँगी।

# मारवणी का संदेश - 152

**वीज न देख चहड्डियाँ, प्री परदेस गयाँह।**

**आपण लीय झबुक्कड़ा, गळि लागी सहरांह।।१५२**

**भाव-**

हे बिजली, ऊँची चढ़ी हुई तुम परदेस गए हुए दूसरों के प्रियजनों को नहीं देखती जो तुम स्वयं शिखरों के गले लगकर क्रीड़ा करती हुई चमक रही हो।

# मारवणी का संदेश - 153

**बीजुळियाँ परोकियाँ, नीठ ज नीगमियाँह।**

**अजइ न सज्जन बाहुड़े, वळि पाछी वळियाँह।।१५३**

**भाव-**

परकीया नायिकाओं की भाँति बिजलियाँ बड़ी ही कठिनता से गयी थीं। हे साजन, तुम अभी तक नहीं लौटे और वे(बिजलियाँ) फिर लौट आई।

# मारवणी का संदेश - 154

**जउ तूँ ढोला, नावियउ, मेहाँ नीगमताँह।**

**किया करायइ सज्जणा, दाधा माँहि घणाँह।।१५४**

**भाव-**

हे ढोला, यदि तुम मेघों के जाते नहीं आए तो हे साजन, मेघों से परिपूर्ण ऋतु में भी मेरे किए कराए (सौभाग्य, अथवा पुण्य) जल जायेंगे।

# मारवणी का संदेश - 155

**वहिलउ आए वल्लहा, नागर चतुर सुजाँण।**

**तुझविण धण बिलखी फिरइ, गुणबिन लाल कमाण।। १५५**

**भाव-**

हे नागर चतुर सुजान प्यारे, शीघ्र आना।तुम्हारे बिना प्रेयसी उदास फिरती है, जिस प्रकार प्रत्यंचा के बिना लाल कमान।